P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-6*February-2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

'महासमर' के नारी पात्र : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

पूनम काजल
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
हिन्दू कन्या महाविद्यालय,
जींद, हरियाणा

सारांश

युग सापेक्ष प्रतिमान परिवर्तित हो सकते हैं, किन्तु यथार्थ वही रहता है। नारी सृष्टि की आदिशक्ति होते हुए भी सदैव समाज द्वारा उपेक्षित एवं प्रताड़ित होती रही है। रामायण काल में सीता के रूप में तथा महाभारत काल में द्रौपदी, अम्बा एवं अम्बालिका के रूप में वह प्रबल पुरुष की स्वार्थ–वृत्ति का दुष्फल भोगती आई है। आधुनिक युग में भी नारी का यह शोषण अनवरत जारी है जो अत्यन्त चिन्तनीय विषय है। नरेन्द्र कोहली ने 'महासमर' में नारी–जीवन से जुड़ी युगीन, शाश्वत व सनातन समस्याओं को उठाया है। पौराणिक सन्दर्भ को आधार बना कर लेखक ने नारी की पीड़ा, शोषण, विवाह–बन्धन की सीमा–रेखा आदि ज्वलंत विषयों का अत्यन्त सहज रूप में कथा में समावेश किया है।

मुख्य शब्द : प्रतिमान, अनादृत, अतिनारी, दीप्ति, प्रतिच्छाया

प्रस्तावना

भारतीय नारी के जीवन में प्रारम्भ से लेकर वर्तमान तक अनेक परिवर्तन आए हैं। कभी समाज ने उसे वन्दनीय समझा, तो कभी निन्दनीय। युग बीतते गए, परन्तु भारतीय नारी सदा ही अनेक कुप्रथाओं एवं बन्धनों की जंज़ीरों में जकड़ी रही। आधुनिक युग में अनेक समाज–सुधारकों के प्रयासों से तथा स्वयं नारी के जागृत होने से उसकी स्थिति में पर्याप्त सुधार हुए एवं अनेक शताब्दियों से उपेक्षित, अनादृत, अधिकार–वंचित तथा पराधीन अबला ने इस नवीन युग में नूतन दीप्ति के साथ प्रवेश किया।[1]

यह सत्य है कि परम्परागत अबला ने इस परिवर्तनशील परिवेश में सबला बनकर पुरुष के समक्ष अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की घोषणा की है जिस कारण उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी अन्तर आया है, लेकिन यह भी कटु सत्य है कि आज भी भारतीय समाज नारी–जीवन से सम्बन्धित अनेक विसंगतियों को ढो रहा है। अशिक्षा और अधीनता के अंधकार युग से शिक्षा, जागृति और समानता के प्रकाश–पुंज में आने के पश्चात् आज भी नारी–शोषण की समस्याएं उतनी ही ज्वलंत हैं, जितनी महाभारत काल में थीं।

यौन–शोषण आधुनिक युग की ऐसी ज्वलंत समस्या है जिसने आज विकराल रूप धारण कर लिया है। वस्तुतः अबोध युवतियों के शोषण की प्रवृत्ति प्राचीन काल से ही चली आ रही है। 'महासमर' की अम्बिका और अम्बालिका के सन्दर्भ में यह शोषण चरम रूप में दिखाई देता है, जब उन दोनों को पर–पुरुष की वासना पूर्ति का साधन बना दिया जाता है, लेकिन अम्बिका के व्यक्तित्व में आधुनिक विद्रोही नारी की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। माता सत्यवती की इस अनुचित आज्ञा पर उसका विद्रोह मुखर हो उठता है – 'मैं आपकी गोशाला की गाय नहीं हूँ, न आपके लिए पौत्र उत्पन्न करने का कोई यंत्र हूँ।'[2] अपने अस्तित्व–रक्षण हेतु वह समस्त पारिवारिक मर्यादाओं को छिन्न–भिन्न कर देने के लिए आतुर है। उसकी दृष्टि में नारीत्व की रक्षा ही उसका धर्म है – '.... पर अम्बिका इस प्रकार का कोई धर्म स्वीकार नहीं करती, जिसमें उसका दम घुटता हो..... आज यदि अम्बिका का धर्म, सत्यवती और भीष्म के धर्म के प्रतिकूल पड़ रहा है तो वह अपने ही धर्म का निर्वाह करेगी।'[3]

आधुनिक युग में दहेज प्रथा की समस्या ने अनेक युवतियों के जीवन को त्रासद बना दिया है। नारी–जीवन के लिए अभिशाप–स्वरूप दहेज प्रथा की जड़ें आधुनिक भारतीय समाज में इतनी गहराई तक फैल गई हैं कि उनको उखाड़ फेंकना असंभव–सा हो गया है। दहेज के अभाव में हुए अनमेल विवाह की त्रासदी को नारी जीवन–भर भोगने के लिए बाध्य है।

नरेन्द्र कोहली के 'बंधन' उपन्यास की सत्यवती के सन्दर्भ में अनमेल विवाह की समस्या स्पष्टतः दिखाई देती है। अपनी दमित इच्छाओं के कारण कुंठित सत्यवती असुरक्षा की भावना से ग्रस्त होकर कुरुकुल में ऐसी

अनियमितताओं की सृष्टि करती है जो भविष्य में सम्पूर्ण कुरुवंश के विनाश का कारण बनती हैं। यह भी कटु सत्य है कि इस प्रकार के दाम्पत्य–सम्बन्ध कभी भी सहज–सुखद नहीं हो पाते। लेखक ने शान्तनु एवं सत्यवती के सन्दर्भ में पति–पत्नी सम्बन्धों की मूल्यहीनता को उजागर कर आधुनिक दाम्पत्य–सम्बन्धों का बखूबी उद्घाटन किया है। नारी की जिस अहं–भावना के कारण आज दाम्पत्य–सम्बन्ध विघटित हो रहे हैं, सत्यवती की उस अहं–भावना के सम्बन्ध में लेखक लिखते हैं – 'इस प्रकार वर प्राप्त कर आई वृद्ध राजा की युवती पत्नी निश्चय ही अधिकारों से मंडित होकर उस राजप्रासाद में रही होगी, जैसे दशरथ के महल में कैकेयी रही थी..... वे दासराज की शर्तों पर सत्यवती से अनमेल विवाह कर उसे अपने महल में लाए थे। ऐसे में निश्चित रूप से उनका और सत्यवती का सम्बन्ध याचक और दाता का ही रहा होगा।'[4]

गहराई से विचार करने पर सत्यवती में हमें उस आधुनिक महत्वाकांक्षी नारी की स्पष्ट झलक दिखाई देती है जो अपनी अनन्त तृष्णाओं के वशीभूत हो धन, शौर्य और वैभव की लालसा में किसी अधेड़ से विवाह करने में भी नहीं हिचकिचाती। राजपत्नी और राजमाता बनने की महत्वाकांक्षा से प्रेरित सत्यवती वृद्ध शान्तनु से विवाह कर सदैव अपनी इन्हीं महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रयासरत रहती है। सत्यवती की इस मानसिकता को उद्घाटित करते हुए नरेन्द्र कोहली लिखते हैं – 'पराशर से सम्बन्ध न होने तथा वृद्ध शान्तनु से विवाह हो जाने के पीछे एक ही तर्क है और वह है – दासराज तथा सत्यवती की सांसारिक महत्वाकांक्षा।..... शान्तनु से विवाह तो सांसारिक लोभ और लाभ की तुला में तुल कर ही हुआ है।'[5]

अपने पति और पुत्र को अपनी इन महत्वाकांक्षाओं की बलि चढ़ाकर भी उसकी महत्वाकांक्षा शांत नहीं होती। दुःख के अतिरेक में वह क्षण–भर के लिए सारा राज–वैभव त्यागकर कहीं दूर भाग जाना चाहती है, लेकिन दूसरे ही क्षण राजसत्ता की भूख उसकी महत्वाकांक्षा को और अधिक बलवती कर देती है – '..... क्या इसीलिए उसने विवाह किया था वृद्ध शान्तनु से कि वह अपने और अपने पुत्र के प्राणों की रक्षा के लिए राज्य, धन–सम्पत्ति..... सब कुछ छोड़कर भाग जाए।'[6]

यह सही है कि आधुनिक समाज में जहाँ एक ओर सत्यवती जैसी नारियों की कमी नहीं है, वहीं दूसरी ओर ऐसी जागरूक नारियाँ भी हैं जो अपने जीवन को अभिशप्त करने वाली मान्यताओं से मुक्त होने के लिए छटपटा रही हैं। आत्मसम्मान के आहत होने पर वे अपने पति तक का त्याग करने से पीछे नहीं हटती हैं। 'बंधन' उपन्यास की माद्री में ऐसी ही एक आधुनिका की छवि दिखाई देती है जो अपने वैवाहिक जीवन से पूर्णतः असंतुष्ट होकर विवाह–सम्बन्धी मान्यताओं के प्रति विद्रोह के लिए उतारू है – 'हमारे विवाह की धर्म–सम्मत अपेक्षाओं पर पाण्डु पूरा नहीं उतरता, इसलिए मैं इस विवाह को धर्म सम्मत नहीं मानती। मैं ऐसे पति का त्याग करूंगी ..... पुरुष जो चाहे कर सकता है। स्त्री को एक पुंसत्वहीन पति को त्यागने का भी अधिकार नहीं है ..... नारी मनुष्य नहीं है क्या? जड़ पदार्थ है? पाषाण है?'[7]

भारतीय समाज में वेश्यावृत्ति सामन्ती व्यवस्था की देन है। सामन्ती व्यवस्था में बहु–विवाह को एक सामाजिक–कानूनी रूप देकर नारी का शोषण किया जाता है। आज भी खुलेआम उसे क्रय–विक्रय की वस्तु बनाकर भोगा जाता है। गांधारी और माद्री के प्रसंग में आधुनिक युग की इस विडम्बना को साक्षात देखा जा सकता है। द्यूतसभा के अवसर पर द्रौपदी के अपमान से आहत गांधारी की अपनी पीड़ा मुखर हो उठती है – 'गांधार के राजप्रासाद से मैं तो पशुबल से घसीटकर हस्तिनापुर लाई ही गई थी, अब क्या कुरुकुल की वधुएँ भी घसीटी जा कर सभाओं में लाई जाएंगी?'[8]

आज की जागरूक नारी किसी के भी खूंटे से बांध दी जाने वाली गाय नहीं है, अपितु वह अपनी इच्छानुसार अपने पति का चुनाव करना चाहती है। अम्बा के व्यक्तित्व में नारी जागरूकता का यह पक्ष प्रबल हो कर उभरा है जब वह रोगी व कामुक विचित्रवीर्य से विवाह का पूर्णतः विरोध करती है – 'यदि वे न माने तो मेरा विवाह मेरी इच्छा के विरुद्ध विचित्रवीर्य से होगा? ..... क्या महाराजकुमार की प्रतिज्ञा की चिंता किए बिना उनका विवाह किसी और की इच्छा से हो सकता है?'[9]

नारी शालीनता की प्रतिमूर्ति मानी जाती है। दया, ममता, करूणा आदि नारी के जन्मजात गुण हैं। यह सत्य है कि आधुनिक नारी स्व–अस्तित्व बनाकर ही समाज में रहना चाहती है। स्वत्व के मिटने व अपमान होने पर वह अपने स्वाभाविक गुणों का तथा नारी–लज्जा का त्याग कर, अपने अपमान का प्रतिकार लेने हेतु नारी से अतिनारी बनने की ठान लेती है। नरेन्द्र कोहली की कृष्ण–कथा में चित्रित अम्बा सही अर्थों में 21वीं शती की विद्रोहिणी नारी की प्रतिशोध–भावना को भी वाणी देती है। अपनी क्षमता और शक्ति को पहचान कर वह निर्भीक स्वर में घोषणा करती है कि वह न तो वस्तु है और न पुरुष की आकांक्षाओं का माध्यम।

कोहली द्वारा चित्रित कुंती एक जीवन्त और गतिशील नारी पात्र है। परिस्थितियों से प्राप्त अनुभवों ने उसके दृष्टिकोण को अन्याय के प्रति अत्यन्त कठोर बना दिया है। उसकी प्रतिच्छाया आज भी विद्यमान है। आज भी नारी अपनों के हाथों अपमानित हो रही है, बाज़ार में बिक रही है। आज भी नारी अपने नारीत्व के अपमान का प्रतिकार करने हेतु संघर्षशील है, आज उसकी खामोशी टूटती जा रही है। उसके स्वर में कुंती का स्वर सुनाई पड़ रहा है – 'मेरे पुत्र युधिष्ठिर से कहना कि वह धर्मराज है..... वह साम, दाम, दण्ड, भेद से किसी भी प्रकार अपने पैतृक राज्य का उद्धार करे ..... मैं, उसकी माता उसे जन्म देकर भी अनाथा की भांति, दूसरों के दिए, अन्न–पिंड की आशा में आकाश की ओर दृष्टि लगाए रहती हूँ ..... उनसे यह भी कहना कृष्ण! कि मुझे उनके राज्य के छिन जाने से भी उतना कष्ट नहीं हुआ, जितना कृष्णा के अपमान से हुआ है। वे उसका निराकरण करें, तो ही इस क्षत्राणी का पुत्र–प्रसव सार्थक होगा।'[10]

'महासमर' की द्रौपदी सही अर्थों में आधुनिक जागरूक नारी की प्रतीक है। वह नर की ऐसी शक्ति की

प्रतीक है जो उसके कल्याण के लिए दुःख सहती आई है। द्रौपदी प्राचीन काल की तेजस्वी नारी है, जिसने अपनी प्रबल शक्ति से पाण्डवों को विजय के कीर्तिमान पथ पर प्रवृत्त किया है। महाभारतकाल की वह प्राचीन नारी आज भी वही शक्ति रखती हे आज भी पुरुष के सुप्त पौरूष में वह चैतन्य की शिक्षा को प्रज्वलित कर सकती है। आज भी युधिष्ठिर के समान हताश, संत्रास एवं मोहभंग की परिस्थितियों से निराश पुरुष में शक्ति–प्रेरित उद्योग का तेज भर कर उसके अन्धकार–वृत्त जीवन को गतिमान और द्युतिमान बना सकती है। इस सम्बन्ध में दुर्योधन के समक्ष भीम का कथन है – 'देख ! द्रौपदी की तपस्या से पाण्डवों ने धृतराष्ट्र पुत्रों को रणभूमि में मार गिराया है।'[11]

अपमान की व्यथा एवं प्रतिशोध की प्रबल भावना द्रौपदी के चरित्र के दो प्रेरक तत्त्व हैं। अपने पतियों के प्रति धिक्कार की भावना उसे परम्परागत भारतीय नारी के सिंहासन से उतार कर आधुनिक जागरूक नारी के धरातल पर ला खड़ा करती है। अपने अपमान से आहत द्रौपदी अपने पतियों को धिक्कारते हुए कहती है – 'मैं तो धिक्कारती हूँ अपने इन पांच पतियों को, इनके क्षत्रियत्व को, इनके युद्ध–कौशल को, इनके दिव्यास्त्रों को..... केशों से पकड़, दुःशासन मुझे भरी सभा में घसीट लाया; और ये लोग बैठे देखते रहे। वे मुझे निर्वस्त्र करने का प्रयत्न करते रहे, काम–भोग का निमन्त्रण देते रहे; और ये सिर झुकाए धर्म–चिन्तन करते रहे..... कैसे बताऊँ कि मेरे मन में अपने पतियों के लिए कैसे–कैसे धिक्कार उठने लगते हैं। मेरे मन में इतनी भयंकर प्रतिहिंसा जागती है कि, इच्छा होती है, सारी सृष्टि को जलाकर क्षार कर दूँ।'[12]

द्रौपदी के इस कथन में युग–युग के संस्कारों से आबद्ध शोषित नारी की मनोव्यथा अंकित हुई है। उसका विद्रोह मानवीय न्याय की आकांक्षा करने वाली वैयक्तिकता का विद्रोह है। शोषणकर्त्ता पुरुष वर्ग के प्रति शोषित नारी का विद्रोह है। द्रौपदी जहाँ अपनी पुरातनता में महाभारत की केन्द्रीय धुरी है, वहीं अपनी नवीनता में वह आधुनिक जागरूक नारी की प्रतीक है।

उद्देश्य

आधुनिक समाज में जहाँ एक ओर स्त्री के स्वतन्त्र अस्तित्व को स्वीकार करके उसे समानता का दर्जा दे कर स्त्री–पुरुष सम्बन्धों को मूल्य की स्थिति तक पहुँचाने का प्रयास देखा जाता है, वहीं दूसरी ओर आज भी नारी के भोग्या वस्तु के रूप में उपयोग की मूल्य–ह्यसात्मक स्थिति का चित्रण भी मिलता है। वस्तुतः 'महासमर' में पौराणिक पात्रों के माध्यम से लेखक ने आधुनिक नारी की विडम्बनापूर्ण स्थिति को उजागर किया है जो अपनी समस्याओं से जूझती, परिस्थितियों से संघर्ष करती, प्राचीन परम्पराओं एवं रूढ़ियों का विरोध करती हुई अपने अस्तित्व–रक्षण हेतु प्रयासरत है।

उपसंहार

'महासमर' के पौराणिक पात्रों के माध्यम से लेखक ने एक शाश्वत सत्य का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है कि हमारे जातीय जीवन में नारी किस भूमिका का निर्वाह करती है? अपने इस प्रश्न के समाधान में उन्होंने महाभारतकालीन नारी के उस शाश्वत स्वरूप का आश्रय लिया है, जो अपनी पुरातनता में भी चिर नवीन है। सच तो यह है कि 'महासमर' के पात्र द्वापर युग में जीने वाले पौराणिक पात्र नहीं है, अपितु अपनी शाश्वतता में वे आज भी उतने ही नवीन हैं। वस्तुतः 'महासमर' के नारी–पात्रों के माध्यम से लेखक ने आधुनिक युग की चेतना–सम्पन्न नारी को ही वाणी प्रदान की है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ. तिलकराज वडैहरा, प्रेमचन्द और नानकसिंह के उपन्यास, पृ. 140*
2. *नरेन्द्र कोहली, बंधन, पृ. 240*
3. *वही, पृ. 265*
4. *नरेन्द्र कोहली, 'जहाँ है धर्म, वहीं है जय', पृ. 31*
5. *वही, पृ. 30*
6. *नरेन्द्र कोहली, बंधन, पृ. 127*
7. *वही, पृ. 298*
8. *नरेन्द्र कोहली, धर्म, पृ. 411*
9. *नरेन्द्र कोहली, अंतराल, पृ. 179*
10. *नरेन्द्र कोहली, प्रत्यक्ष, पृ. 268*
11. *नरेन्द्र कोहली, निर्बन्ध, पृ. 441*
12. *नरेन्द्र कोहली, अंतराल, पृ. 90–91*